18-11-70

काल होता नहीं जो किसको ले जाये। काल को हुकुम ही नहीं हैं नई दुनिया में आने कारवण की तो यह पुरानी दुनिया है ना। तुम बुलाते भी यहाँ हो। बाप कहते हैं मैं पुरानी दुनिया पराये शरीर में आता हूँ। इस ने ही पूरे 84 जन्म लिये हैं। मैं पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ। तुम पावन बन फिर औरों को पावन बनाते हो। सन्यासी तो भाग जाते हैं। एकदम गुम हो जाते हैं। पता ही नही पड़ता है कहाँ चला गया क्यों कि वह ड्रेस ही बदल लेते हैं। पुलिस को भी सन्यासी ड्रेस में सी0आई0डी0 रखनी पड़ती है। जैसे एक्टर्स रूप बदलते हैं। सतयुग में थोड़ेही ऐसी बातें होंगी। यह है ही छी छी दुनिया। बाप कहते हैं हम आते हैं फिर नई दुनिया बनाने। फिर ड्रामा प्लैन अनुसार जब द्वापर शुरू होता है तो देवी- देवताएं वाममार्ग में चले जाते हैं। उन्हों के बहुत गंदे चित्र भी जगतनाथ पूरी में है। जगतनाथ का मंदिर है। यह तो उनकी राजधानी थी। जो विश्व का मालिक था वह मंदिर में जाकर बन्द हुआ है। उनको काला मुँह दिखाते हैं। इस ज जगतनाथ के मंदिर पर तुम बहुत समझा सकते हो। और कोई इनका अर्थ समझ नहीं सकते हैं। देवताएं ही पूज्य से पुजारी बनते हैं। वह लोग तो हर बात में भगवान के लिये कह देते आपेही पूज्य आपेही पुजारी... आपे ही सुख देते हो आप ही दुःख देते हो। बाप कहते हैं मैं तो किसको दुःख देता ही नहीं हूँ। यह तो समझ की बात है। बच्चा जन्म लिया तो खुश होंगे, बच्चा मरा तो रोने लग पड़ेंगे। भगवान ने दुःख दिया। अरे यह अल्प काल का सुख- दुःख तुमको रावणराज्य में मिलता है। मेरे राज्य में दुःख की बात नहीं होती। सतयुग को कहा ही जाता है अमरलोक। इनका नाम ही है मृत्युलोक। अकाले मर पड़ते हैं। वहाँ तो बहुत खुशियाँ मनाते हैं। आयु भी बड़ी रहती है। बड़ी में बड़ी आयु 150 वर्ष की होती है। यहाँ भी कब कब ऐसी कोई की होती है परन्तु यहाँ स्वर्ग तो नहीं है ना। कोई शरीर को बहुत सम्भाल से रखते हैं तो आयु बड़ी भी हो जाती है। फिर बच्चे भी कितने हो जाते हैं। परिवार बढ़ता जाता है। वृधि जल्दी हो जाती है। जैसे झाड़ से टाल्टालियाँ निकलती है। 50 टालियाँ निकलेंगी फिर उनसे और 50 टालियाँ निकलेंगी। कितना वृधि को पाते हैं। यह भी ऐसे हैं। इसलिये इनका मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है। बाकी आदि सनातन देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। कोई को पता ही नहीं देवताएं कब थे। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। आगे कब तुम ख्याल भी नहीं करते थे बाप ही आकर यह सभी बातें समझाते हैं। तुम अब बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि मध्य अन्त डियुरेशन आदि सभी को जान गये हो। दुनिया नई से पुरानी, पुरानी से नई कैसे बनती है यह कोई नहीं जानते। अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठे हो। यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो- फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होंगी जो पक्के भक्त होते हैं। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की भक्ति होती है फिर 5 तत्वों की भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है। क्योंकि उन्हों का शरीर भी सतोप्रधान है मनुष्यों का शरीर तो पतित है वह तो पावन है। फिर द्वापर से लेकर सभी पतित बन पड़ते हैं। नीचे गिरते आते हैं। सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है समझाने का। जीन की भी कहानी बताते हैं। यह सभी दृष्टान्त आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। तुम कीड़ों को आप समान ब्राहमण बनाते हो। यहाँ के ही सभी दृष्टान्त है जो सन्यासी लोग फिर कापी करते हैं। बाप कहते हैं वास्तव में उन्हों को कापी करने का भी कोई हक नहीं हैं। शास्त्र पढ़ने का हक नहीं। उन्हों का निवृतिमार्ग ही अलग है। यात्रा पर भी जाते हैं तो एक ब्राहमण गाईड ले जाते हैं। सन्यासी कोई ब्राहमण नहीं बनते हैं। यात्रा हमेशा ब्राहमण लोग कराते हैं। तुम भी जिसमानी यात्रा करते थे। अभी फिर बाप द्वारा रूहानी यात्रा सीखते हो। वह ब्राहमण है नहीं परन्तु आजकल वह खूरा गड़े हैं। बाबा तो सभी क्लीयर कर देते हैं कि कायदा क्या कहती है। कायदे को ज्ञान